International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

निराला साहित्य में स्त्री वमर्श

● रंभा कुमारी
प्राध्यापक, आरकेएस इंटर कॉलेज
डाल मयानगर, रोहतास

प्रत्येक मानवतावादी व्यक्ति सकारात्मक शक्ति के संपर्क में शीघ्र ही आ जाता है। जिसकी अमर झलक उसके संपूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व में स्पष्ट दिखती है। ऐसे ही मानवीय मूल्यों एवं संवेदनशीलता से परिपूर्ण महाक व निराला थे। उनके जीवन पर इन मूल्यों का प्रभाव इतना गहरा था क उसकी प्रखर अ भव्यक्ति उनके साहित्य में बड़ी सहजता से देखी जा सकती है। समाज हितैषी रामकृष्ण परमहंस, रवींद्रनाथ टैगोर, स्वामी ववेकानंद जैसे मनी षयों के चंतन से प्रभा वत एवं उनके प्रति अनन्य आस्था रखने वाले मानवतावादी सूर्यकांत त्रिपाठी निराला उद्तीप्त सूर्य की भांति हिंदी साहित्य में आज भी दैदीप्यमान हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी निराला वास्तव में निराले ही थे। उन्होंने अपने समय की हर समस्या को न केवल साहित्य का वषय बनाया, बल्कि उसे सशक्त अ भव्यक्ति भी दी।

निराला ने तत्कालीन समाज में व्याप्त साम्राज्यवादी शक्तियों के अमानवीय दृष्टिकोण और आ र्थक शोषण को अपने साहित्य में मुखरित कया। सामंतवादी सत्ता के प्रतीक जमींदार, ताल्लुकेदार, देशी रजवाड़े और महाजन आदि के शोषण चक्र में पसते कसानों की दुर्दशा का चत्रण अपने साहित्य में कया। वह वर्ण-व्यवस्था और छुआछूत के वरुद्ध आवाज़ उठाना, जातिवाद का प्रबल वरोध, मानवतावाद की प्रतिष्ठा और द लतों-उपे क्षतों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते थे। ऐसे में यह प्रश्न उठना स्वाभा वक है क आ खर निराला का स्त्रियों के प्रति कैसा दृष्टिकोण था, क्या वह पतृसत्तात्मक सत्ता के प्रतिनि ध थे? या शताब्दियों से पी ड़त स्त्री के प्रति उदारवादी थे या नहीं।

स्त्रियों से संबं धत अनेकानेक प्रश्नों का उत्तर उनके साहित्य में अनायास ही मल जाता है। निराला-साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है क पतृसत्तात्मक आचार-संहिता की यातना की शकार नारी की दर्दनाक स्थिति का अनुभुव वह बहुत पहले ही कर चुके थे; जो स्त्री- वमर्श आज साहित्य का प्रमुख वषय बन हुआ है। उससे भी अ धक संतु लत स्त्री- वमर्श की उपस्थिति निराला साहित्य में मलती है। निराला ने स्त्री- वमर्श को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल प्रस्तुत कया है। जिसमें स्त्री पुरुषों के वरुद्ध नहीं, उसकी संगीनी है जो उसके साथ कंधे से कंधा मलकर हर स्थिति का सामना करती है। अर्थात् दोनों की समानता पर बल दिया।

निराला अपने साहित्य में केवल समस्याओं को ही नहीं, उनका ठोस समाधान भी वह प्रस्तुत करते चले हैं। निराला ने सही अर्थों में स्त्री- वमर्श की चर्चा की है। कंतु आज जिस स्त्री- वमर्श की चर्चा है, वह कभी तो पाश्चत्य का अंधानुकरण लगता है, तो कभी नारी-देह की अ भव्यक्ति मात्र। वर्तमान स्त्री- वमर्श में स्त्री-पुरुष दोनों एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी या वैरी से दिखाई देते हैं, जब क सत्य एकदम इसके वपरीत है। स्त्री और पुरुष दोनों एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी नहीं, एक-दूसरे के पूरक हैं। एक के अभाव में दूसरा पूर्णतः अधूरा है। इस सत्य की संगति निराला साहित्य स्पष्ट होती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

नवीनता को उद्घाटित करने वाले निराला का साहित्य सही अर्थों में स्त्री- वमर्श का साहित्य है। उन्होंने पुरुष को स्त्री का दुश्मन नहीं कहा, बल्कि स्त्री- वमर्श के आधारभूत चंतन के द्वारा उसकी शक्षा के वषय में अपना बुलंद स्वर प्रकट कया है। स्त्री- शक्षा के वषय में उनका मत था क यदि स्त्री को उ चत प्रकार से श क्षत कया जाए तो वह हर प्रकार की गुलामी एवं परतंत्रता से मुक्त हो सकती है। मुक्ति की इस कामना को आधार बनाकर उन्होंने यह मत प्रकट कया—" श क्षत महिलाएँ ही अ ववेक और परतंत्रता के अंधकार को दूर करके स्वतंत्र व्यक्तित्व का निर्माण कर सकती हैं। शक्षा ही स्त्रियों में स्वतंत्र, तेजस्वी, मेधावी बालक-बा लकाओं को जन्म देंगी।"

यदि स्त्री सदियों से गुलाम रहीं तो उसका एकमात्र कारण यही है क उसे पूर्वनियोजित षड्यंत्र के अंतर्गत शक्षा के अ धकार से वं चत रखा गया। अपने साहित्य के माध्यम से वह स्त्री- शक्षा के लए अत्यंतावश्यक प्रयास की बात प्रखर करते रहे। इस स्वर में स्त्री- वमर्श पर बहुत बल दिया, जो निराला की रचनाओं में सहज, स्वाभा वक रूप में दिखता है। स्त्री के चहुँमुखी वकास के लए स्त्री की स्वतंत्रता को आवश्यक मानते थे। उन्होंने स्पष्ट कहा है — "महिलाओं की स्वतंत्रता ही उनके जीवन की सब दिशाओं का वकास करेगा। हमें सर्फ स्वतंत्रता का स्वरूप बतलाना है।"

स्वतंत्रता के इस वचार की अ भव्यक्ति उनके 'अलका' नामक उपन्यास की नायिका अलका के रूप में देखा जा सकता है। 'अलका' नारी स्वातंत्र्य की प्रतिमा है। वह जमींदार मुरलीधर का डटकर मुकाबला करते हुए स्वयं को उसकी वासना का शकार होने से बचाती है। इस बचाव में वह उसे गोली तक मारने से पीछे नहीं हटती। निराला साहित्य के माध्यम स्त्री-स्वातंत्र्य के लए ऐसा मार्गदर्शन करते हैं। जिससे प्रेरित होकर वर्तमान में 'स्त्री- वर्मश' नामक नवीन मुहिम चलायी जा रही है। ता क स्त्रियों को उनके हिस्से का मान-सम्मान दिलाया जा सके।

निराला स्त्री-स्वतंत्रता का हनन करने वाले पुरुष के स्वार्थपूर्ण अ धकारों का वरोध करते हैं। वह सुहाग- चह्नों को धारण करने वाले संदूर, बिंदी, बिछुवे, मंगलसूत्र आदि को नारी-परतंत्रता का वषय मानते हैं। उनकी दृष्टि में सुहाग को प्राण समझकर, उसके चह्नों को धारण करना, स्त्रियों के लए सम्मानजनक कदा प नहीं हो सकता। उनके 'अलका' नामक उपन्यास की स्त्री-पात्र सा वत्री बिंदी, संदूर और चूड़ी कभी नहीं पहनती। आज स्त्री- वमर्श की जो आवाज़ का उठाती है, वैसी आवाज़ निराला दर्शकों पहले ही मुखरित कर चुके थे।

महाक व निराला के संदर्भ में एक बात ध्यातव्य है क यद्य प वह स्त्री-स्वातंत्र्य के पक्षधर थे। परंतु वह स्वतंत्रता के अंधानुकरण के समर्थक कदा प नहीं। वह भारतीय नारी का पाश्चात्य सभ्यता की चकाचौंध से अ भभूत हो जाना भी बहुत बुरा मानते थे। वह भारतीय-पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति के संतुलन के पक्षपाती थे। वह इतना अवश्य चाहते थे क उनकी स्त्रियाँ अन्याय का प्रतिकार करने में सक्षम बने। कठोर बंधनों और रुढ़ियों को तोड़ने का साहसपूर्ण उद्योग कर पुरुष के साथ कंधे से कंधा मलाकर हर क्षेत्र में स क्रय रहें।

निराला प्रेम और ववाह के संबंध में महिलाओं को पूर्णतः स्वतंत्र देखना चाहते हैं। जिसका प्रमाण उनके उपन्यास 'निरुपमा' के कथन में दिखाई देता है। इस उपन्यास में वरपक्ष कन्या को जितनी बार चाहे देख सकता है। कंतु कन्या को इसकी आजादी नहीं। हर स्थिति में वर वरेण्य ही होगा। इस उपन्यास में नायिका के लए या मनी बाबू मनोनीत नहीं, जिससे वह

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

ववाह करना चाहती है। इस प्रकार कहा जा सकता है क वह स्त्री-पुरुष के उन्मुक्त प्रेम पर बल देने वाले जातिगत संकीर्णताओं के वरोधी, मानवतावादी लेखक थे। निराला ने अपने समय के साहित्य और समाज का गहन अध्ययन, चंतन एवं मनन कया। तब वह इस तथ्य पर पहुँचे क आज स्त्री की जो दीन-हीन दशा है। उसका उत्तरदायित्व मुल्लाओं और पं डतों पर है। अतः अपने साहित्य द्वारा वह इनके प्रति अपना वरोध प्रकट करते हैं।

नारी दुर्दशा का एक बड़ा कारण आ र्थक परावलंबन है। इस भाव को केंद्र में रखकर निराला, पुरुषों पर निर्भर होने के कारण ही स्त्रियों को असंख्य अत्याचार सहने की घटना प्रकट करते हैं। यदि उनमें स्वावलंबन आ जाए, तो पुरुष की श्रेष्ठता का भाव स्वयंमेव समाप्त हो जाएगा। नारी को दयनीय एवं पराधीन बनाने वाली अमानवीय शक्तियों के वरुद्ध उन्होंने सशक्त स्वर में कहा है- 'जब तक हमारी गृह दे वयाँ लक्ष्मी और सरस्वती बनकर हमारे जीवन के गृह अंधकार को दूर नहीं करतीं, तब तक हम अपने जीवन में सुख और कसी भी प्रकार की शक्ति के वकास की कामना नहीं कर सकते।' निराला की दृष्टि में जब तक हमारे घर की बहन-बेटी आंसू बहाती रहेगी, तब तक हम वजय नहीं हो सकते। इस पर वह कहते हैं— "स्त्रियों को उत्साह देने से पुरुषों में कतनी बड़ी शक्ति का जागरण हो सकता है।"

निराला हर क्षेत्र में नवीन स्वर को लाने वाले साहित्यकार थे। उनकी दृष्टि में महिला को हर मुक्ति के लए कुंठित बंधनों से मुक्त करना आवश्यक है। इस लए वह स्त्री को हर प्रकार की ग्रं थयों एवं बाधाओं से मुक्त करने की अ भलाषा इन पंक्तियों में व्यक्त करते हैं-

नहीं लाज, भय, अनृत, अनय, दुःख,
लहराता उर मधुर प्रणय सुख,
अनायास ही ज्योतिर्मय मुख, स्नेह-पाश-कसना